कहानी

मोनू बंदर की शरारत

बहुत समय पहले एक घने जंगल के किनारे एक छोटा-सा सुंदर गाँव था. उस जंगल में तरह-तरह के जानवर रहते थे—हिरण, खरगोश, लोमड़ी, हाथी और बंदरों का एक बड़ा झुंड. उन्हीं बंदरों में एक नटखट लेकिन बहुत होशियार बंदर था, जिसका नाम मोनू था. मोनू को नई-नई चीजें खोजने का बहुत शौक था. वह दिनभर पेड़ों से कूदता-फांदता और जंगल के अलग-अलग हिस्सों में घूमता रहता था. एक दिन सुबह-सुबह वह जंगल के किनारे वाले रास्ते पर पहुंच गया. अचानक उसकी नजर एक चमचमाती पीतल की घंटी पर पड़ी. शायद किसी यात्री की गाड़ी से गिर गई थी. मोनू ने उत्सुकता से उसे उठाया और हल्का-सा हिलाया. 'टन-टन-टन!' की तेज आवाज जंगल में गूंज उठी. आवाज इतनी साफ और मधुर थी कि मोनू खुशी से उछल पड़ा. उसे लगा जैसे उसे कोई अनमोल खजाना मिल गया हो. वह घंटी लेकर एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया और बार-बार उसे बजाने लगा. हर बार घंटी की आवाज दूर-दूर तक सुनाई देती. नीचे से गुजर रहे जानवर चौंक जाते. हिरण डरकर भागते, खरगोश अपने बिल में घुस जाते और पक्षी उड़ जाते. किसी को समझ नहीं आ रहा था कि यह आवाज कहां से आ रही है. कुछ ही दिनों में जंगल में अफवाह फैल गई कि कोई रहस्यमयी भूत जंगल में आ गया है. जब भी घंटी बजती, जानवर घबराकर इधर-उधर भागने लगते. लोमड़ी ने एक दिन कहा, 'मैंने अपनी जिंदगी में ऐसी आवाज कभी नहीं सुनी. जरूर कोई अदृश्य शक्ति है!' हाथी भी चिंतित हो गया. उसने सब जानवरों को इकट्ठा करके कहा, 'जब तक हमें सच्चाई पता नहीं चलती, हमें सावधान रहना चाहिए.'

धीरे-धीरे यह खबर गाँव तक पहुंच गई. गाँव वाले भी रात को जंगल की तरफ से आती घंटी की आवाज सुनते और डर जाते. उन्होंने जंगल जाना बंद कर दिया. लकड़हारे लकड़ी लेने नहीं जाते, चरवाहे अपने पशुओं को जंगल के पास नहीं ले जाते. गाँव में तरह-तरह की बातें होने लगीं.

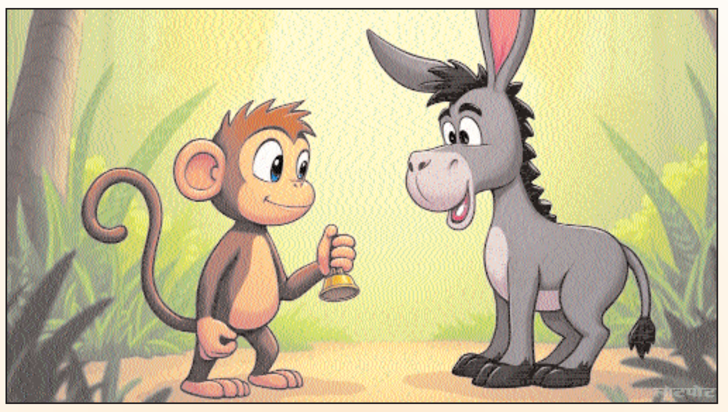

लेकिन उसी गाँव में रीना नाम की एक समझदार और साहसी लड़की रहती थी. वह स्कूल में हमेशा सवाल पूछती और हर बात की सच्चाई जानने की कोशिश करती. जब उसने घंटी की कहानी सुनी तो उसे विश्वास नहीं हुआ. उसने सोचा, 'बिना देखे और समझे किसी को भूत कैसे कह सकते हैं? हो सकता है इसके पीछे कोई साधारण कारण हो.'

अगली सुबह रीना ने अपनी माँ से कहा, 'मैं जंगल जाकर देखना चाहती हूँ कि सच्चाई क्या है.' माँ ने पहले मना किया, लेकिन रीना की जिद और समझदारी देखकर उसे अनुमति दे दी. रीना एक मजबूत लाठी लेकर जंगल की ओर चल पड़ी.

जंगल में प्रवेश करते ही अचानक 'टन-टन-टन!' की आवाज गूंजी. उसका दिल जोर से धड़कने लगा, लेकिन वह रुकी नहीं. उसने ध्यान से देखा कि आवाज ऊपर से आ रही है. वह धीरे-धीरे उस दिशा में बढ़ी और एक बड़े पेड़ के नीचे जाकर खड़ी हो गई. तभी उसने देखा कि पेड़ की ऊँची डाल पर मोनू बंदर घंटी बजा-बजाकर मस्ती कर रहा है.

रीना जोर से हंस पड़ी. 'अरे! तो यह है हमारा भूत!' उसकी आवाज सुनकर मोनू घबरा गया और घंटी गिराकर दूसरे पेड़ पर कूद गया. रीना ने घंटी उठा ली और समझ गई कि सारा डर सिर्फ एक गलतफहमी थी. वह गाँव वापस आई और सबको पूरी बात बताई. पहले तो लोगों को विश्वास नहीं हुआ, लेकिन जब वह सबको जंगल ले गई और घंटी दिखाकर सच समझाया, तो सब अपनी बेवजह की घबराहट पर हंसने लगे. गाँव वालों ने रीना की बहादुरी की तारीफ की और कहा, 'अगर तुम सच्चाई जानने नहीं जातीं, तो हम आज भी डर में जी रहे होते.' मोनू भी पेड़ पर बैठा यह सब देख रहा था. उसे समझ आ गया कि उसकी शरारत से सब परेशान हो गए थे. उसने तय किया कि अब वह बिना सोचे-समझे ऐसी हरकत नहीं करेगा जिससे दूसरों को नुकसान हो.

कुछ ही समय बाद जंगल में एक और समस्या आ गई. गर्मी बहुत बढ़ गई और पानी के स्रोत सूखने लगे. जानवर प्यास से परेशान थे. पास में एक पुराना कुआँ था, लेकिन उसमें पानी बहुत नीचे था. कोई भी जानवर वहां से पानी नहीं निकाल पा रहा था. उसी समय एक प्यासा कौआ वहाँ आया. उसने कुएँ में झांककर देखा कि थोड़ा-सा पानी नीचे है. उसने सोचा, 'अगर मैं कोशिश करूँ तो शायद पानी ऊपर आ सकता है.' वह आसपास से छोटे-छोटे कंकड़ उठाकर कुएँ में डालने लगा. दूसरे जानवर उसका मजाक उड़ाने लगे. लोमड़ी बोली, 'इतने छोटे कंकड़ों से क्या होगा?' लेकिन कौआ हार नहीं मान रहा था. धीरे-धीरे कंकड़ों की वजह से पानी ऊपर आने लगा. कुछ देर बाद पानी इतना ऊपर आ गया कि कौआ आराम से अपनी चोंच से पानी पी सका. यह देखकर बाकी जानवर चकित रह गए. उन्हें समझ आया कि धैर्य और समझदारी से बड़ी समस्या भी हल हो सकती है.

इस घटना के बाद जंगल के जानवरों ने मिलकर पास में एक छोटा तालाब बनाने का निश्चय किया ताकि भविष्य में पानी की कमी न हो. गाँव वाले भी मदद के लिए आए. सबने मिलकर मेहनत की और कुछ ही दिनों में सुंदर तालाब तैयार हो गया. अब जंगल और गाँव दोनों में खुशी लौट आई. लोगों और जानवरों ने दो बड़ी बातें सीखी—पहली, बिना सच्चाई जाने डरना नहीं चाहिए; और दूसरी, कठिन समय में धैर्य और बुद्धि से काम लेना चाहिए.

सीख:

डर अक्सर अज्ञान से पैदा होता है, और समस्याएँ धैर्य व समझदारी से हल होती हैं.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

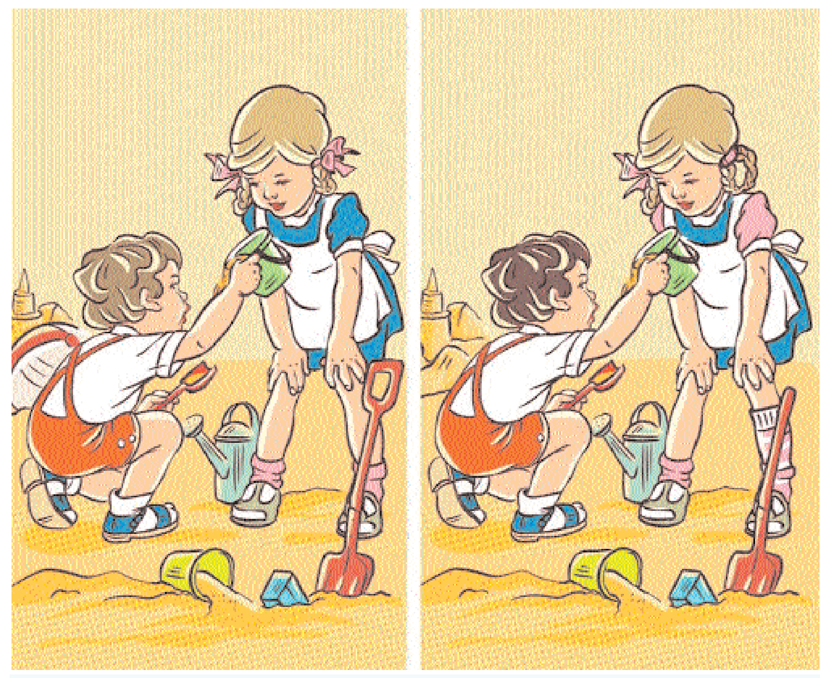

उत्तर- 1. लड़की के कपड़ों का रंग बदला हुआ है 2. पीछे रेत का बना हुआ किला एक जैसा नहीं है, दूसरे में अलग आकार का है. 3. लड़की के बालों की चोटी में हल्का बदलाव है.

धरती पर बढ़ता प्रदूषण

प्रदूषण का अर्थ है वातावरण में हानिकारक पदार्थों का मिल जाना, जिससे प्रकृति, मनुष्य और जीव-जंतुओं को नुकसान पहुँचे. आज के समय में प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक समस्या बन चुका है. बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, शहरीकरण और वाहनों की अधिक संख्या इसके मुख्य कारण हैं. प्रदूषण कई प्रकार का होता है. सबसे प्रमुख है वायु प्रदूषण, जो तब होता है जब हवा में धुआँ, धूल, जहरीली गैसें और सूक्ष्म कण मिल जाते हैं. फैक्ट्रियों का धुआँ, वाहनों से निकलने वाली गैसें और कचरा जलाना इसके बड़े कारण हैं. इससे दमा, खांसी, फेफड़ों की बीमारी और हृदय रोग जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं. दूसरा है जल प्रदूषण, जो नदियों, झीलों और तालाबों में गंदगी, रसायन, प्लास्टिक और औद्योगिक कचरे के मिल जाने से होता है. दूषित पानी पीने से हैजा, टायफाइड जैसी बीमारियाँ फैलती हैं और जलीय जीवों का जीवन भी खतरे में पड़ जाता है. भूमि प्रदूषण तब होता है जब जमीन पर प्लास्टिक, कचरा और रासायनिक पदार्थ जमा हो जाते हैं. अत्यधिक कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग से मिट्टी की उर्वरता घटती है और फसल उत्पादन प्रभावित होता है.

ध्वनि प्रदूषण भी एक महत्वपूर्ण समस्या है, जो वाहनों के हॉर्न, लाउडस्पीकर और मशीनों के तेज शोर से उत्पन्न होता है. अधिक शोर से तनाव, सिरदर्द और सुनने की क्षमता में कमी हो सकती है. इसके अलावा प्रकाश प्रदूषण और रेडियोधर्मी प्रदूषण भी पर्यावरण को प्रभावित करते हैं.

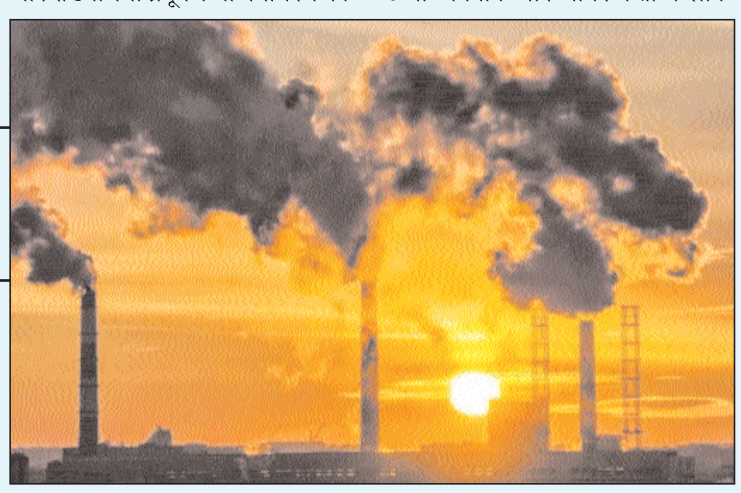

इन सभी प्रकार के प्रदूषण का सीधा असर मानव स्वास्थ्य और प्राकृतिक संतुलन पर पड़ता है. इसलिए हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ लगाने, प्लास्टिक का कम उपयोग करने, स्वच्छ ऊर्जा अपनाने और जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण मिल सके.

प्रेरक प्रसंग

श्रीनिवास रामानुजन : संख्याओं के जादूगर

भारत में एक ऐसे महान गणितज्ञ हुए, जिन्हें लोग 'संख्याओं का जादूगर' कहते हैं उनका नाम था श्रीनिवास रामानुजन. उनका जन्म 22 दिसंबर 1887 को तमिलनाडु के एक छोटे से शहर इरोड में हुआ था. उनका परिवार बहुत साधारण था और आर्थिक स्थिति भी मजबूत नहीं थी, लेकिन उनके सपने बहुत बड़े थे.

रामानुजन बचपन से ही गणित से बहुत प्यार करते थे. जब दूसरे बच्चे खेलते थे, तब वे संख्याओं के साथ खेलते थे. उन्हें किताबों में दिए गए सवाल हल करना ही नहीं, बल्कि खुद नए सवाल बनाना और उनके जवाब ढूंढना भी पसंद था. कहते हैं कि उन्होंने कम उम्र में ही कॉलेज स्तर के कठिन गणितीय प्रश्न हल कर लिए थे.

लेकिन उनकी पढ़ाई का रास्ता आसान नहीं था. वे गणित में तो बहुत तेज थे, पर दूसरे विषयों में उतनी रुचि नहीं लेते थे. इसी कारण वे परीक्षा में कई बार असफल भी हुए. फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी. वे अपने छोटे-से कमरे में बैठकर दिन-रात गणित के नए-नए सूत्र लिखते रहते थे. उनके पास ज्यादा किताबें नहीं थीं, फिर भी उन्होंने अपनी मेहनत और बुद्धि से अनगिनत खोजें कीं.

रामानुजन ने संख्या सिद्धांत, अनंत श्रेणियों और जटिल गणितीय समीकरणों पर काम किया. उन्होंने ऐसे-ऐसे सूत्र दिए, जो आज भी वैज्ञानिक और गणितज्ञ उपयोग करते हैं. उनके दिमाग में संख्याएँ जैसे जीवित हो जाती थीं. एक बार उन्होंने एक संख्या 1729 के बारे में कहा कि यह बहुत खास है. बाद में पता चला कि वह संख्या दो अलग-अलग तरीकों से दो घनों (ष्ह्ड्डद्गह्य) के योग के रूप में लिखी जा सकती है. आज भी 1729 को 'रामानुजन संख्या' कहा जाता है.

भारत में रहते हुए उन्हें अपने काम के लिए ज्यादा पहचान नहीं मिली. तब उन्होंने अपने सूत्र इंग्लैंड के प्रसिद्ध गणितज्ञ जी. एच. हार्डी को भेजे. हार्डी उनकी प्रतिभा देखकर हैरान रह गए और उन्हें इंग्लैंड बुलाया. वहाँ उन्होंने मिलकर कई महत्वपूर्ण शोध किए और पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन किया.

रामानुजन की कहानी हमें यह सिखाती है कि अगर आपके अंदर सच्ची लगन है, तो कोई भी कठिनाई आपको रोक नहीं सकती. गरीबी, संसाधनों की कमी या असफलता—इनमें से कोई भी चीज सफलता के रास्ते में दीवार नहीं बन सकती, अगर आप मेहनत करते रहें.

आज भारत में हर साल 22 दिसंबर को 'राष्ट्रीय गणित दिवस' मनाया जाता है, ताकि बच्चे गणित से डरें नहीं, बल्कि उसे समझें और उससे दोस्ती करें. रामानुजन का जीवन हमें प्रेरणा देता है कि अपने सपनों पर विश्वास रखें और लगातार प्रयास करते रहें.

भूल भुलैया

कविता: मेरा सूरज

सुबह-सुबह जब सूरज आता,
सोने सा आकाश सजाता.
किरणों से जग रोशन करता,
अँधियारा पल में दूर भगाता.

चिड़िया गाती, फूल खिलाते,
नन्हें बच्चे खेल को जाते.
मेहनत का संदेश सिखाता,
हर दिन आगे बढ़ना बताता.

आईना से जुड़े रोचक तथ्य

- आईना प्रकाश को परावर्तित करता है, इसलिए हमें अपनी छवि दिखाई देती है.
- सामान्य आईने के पीछे चाँदी या एल्युमिनियम की परत चढ़ाई जाती है.
- सबसे पहले प्राचीन काल में लोग पानी या चमकदार धातु में अपना चेहरा देखते थे.
- आधुनिक काँच का आईना लगभग 19वीं सदी में प्रचलित हुआ.
- समतल आईना वस्तु की सीधी लेकिन उलटी (बाएँ-दाएँ बदली हुई) छवि बनाता है.
- अवतल और उत्तल आईने अलग-अलग प्रकार की छवियाँ बनाते हैं.
- गाड़ियों में लगे साइड मिरर प्राय: उत्तल आईने होते हैं, ताकि ज्यादा क्षेत्र दिखाई दे.
- आईना हमेशा वही दिखाता है जो उसके सामने होता है, वह झूठ नहीं बोलता.
- दूरबीन और पेरिस्कोप जैसे उपकरणों में भी आईनों का उपयोग होता है.
- आईना केवल चेहरा देखने के लिए ही नहीं, बल्कि विज्ञान और चिकित्सा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

बूझो तो जानें

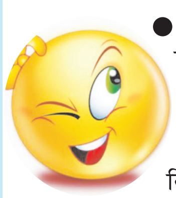

- ऐसी कौन-सी चीज है जो पानी पीते ही मर जाती है?
  आग
- वह क्या है जो बिना पैरों के दौड़ती है और बिना मुँह के बोलती है?
  नदी
- ऐसी कौन-सी चीज है जो जितना खींचो उतनी छोटी होती जाती है?
  सिगरेट / बीड़ी
- ऐसी कौन-सी चीज है जो खुद गीली होती है और दूसरों को सुखाती है?
  तौलिया
- ऐसी कौन-सी चीज है जो हमेशा आती है लेकिन कभी पहुँचती नहीं?
  कल (आने वाला कल)
- ऐसा कौन-सा कमरा है जिसमें न दरवाजा है, न खिड़की?
  मशरूम
- ऐसी कौन-सी चीज है जिसे जितना साफ करो, उतनी काली होती जाती है?
  ब्लैकबोर्ड

हंसी-ठिठोली

- टीचर: बताओ सबसे तेज़ क्या दौड़ता है?
  पप्पू: सर, बिजली!
  टीचर: कैसे?
  पप्पू: क्योंकि बिल आते ही पापा दौड़ पड़ते हैं!
- मम्मी: पढ़ाई कर ली?
  बेटा: हाँ मम्मी, मोबाइल 100% चार्ज कर लिया!
- टीचर: अगर तुम्हारे पास 5 आम हैं और 2 खा लिए, तो कितने बचे?
  गोलू: 5!
  टीचर: कैसे?
  गोलू: क्योंकि मैं किसी को नहीं दूँगा!
- पापा: इतने नंबर क्यों कम आए?
  बेटा: पापा, सवाल ही गलत थे!
- दोस्त: होमवर्क किया?
- दूसरा: नहीं, आज तो कॉपी भी छुट्टी पर है!
- टीचर: बताओ, चाँद दिन में क्यों नहीं दिखता?
  छात्र: क्योंकि वो भी छुट्टी पर होता है!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें.

बिंदु मिलाओ

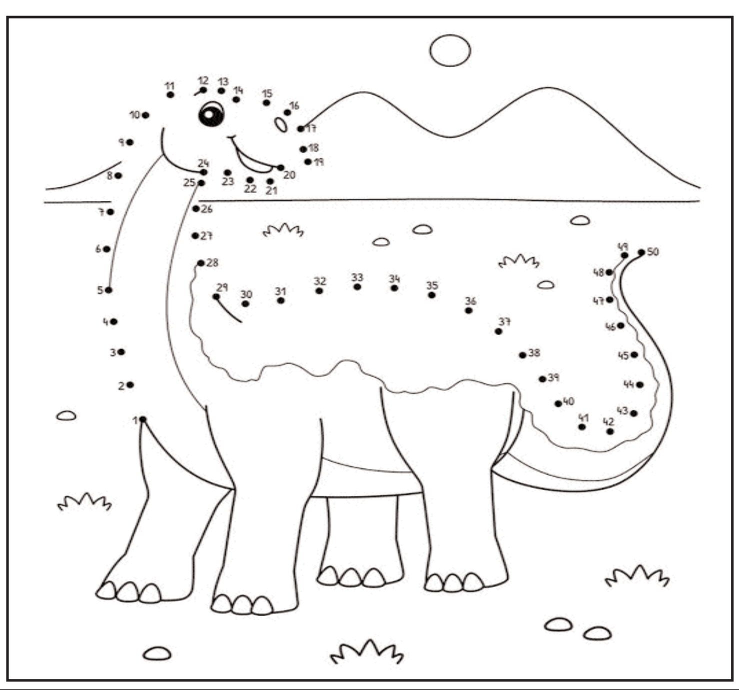

रंग भरो